ISSN 0975-119X
Vol-11-Issue-6
November-December-2019

जैन ज्योतिषविद्या: एक परिचयात्मक अनुशीलन

डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

सहायक आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं।

शोध-सारांश

भारतीय संस्कृति अतिप्राचीन संस्कृति है। इसके प्रमुख स्तम्भों में यहां प्रचलित अनेक विद्याएं हैं, उनमें से ज्योतिषविद्या भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। भारतीय ज्योतिषविद्या पूर्णतः वैज्ञानिक एवं सर्वमान्य विद्या है। यह भारतीय ज्ञान का महत्त्वपूर्ण अंग मानी जाती है। एक ओर आचार्यों ने इसे पराविद्या की कोटी में ला दिया वही दूसरी ओर इसका प्रवेश सर्व-साधारण के जीवन में इस सीमा तक व्याप्त हो गया कि शुभ घड़ी, लग्न, मूहूर्त-शोधन दिनचर्या के अंग बन गये। इस विद्या के उत्तरोत्तर विकास के लिए जहां सभी वर्गों के विद्वानों ने अपनी भूमिका निभाई है वहीं जैनाचार्यों का भी प्रमुख योगदान रहा है। आगमों से लेकर वर्तमान युग तक अनेक आचार्यों ने ज्योतिषविद्या को पल्लवित और पुष्पपित किया है। जैनाचार्यों द्वारा प्रणीत ज्योतिष-ग्रन्थों के द्वारा अनेक नवीन तथ्यों का समावेश हुआ है। वहीं अनेक प्राचीन सिद्धान्तों का परिमार्जन भी हुआ है। इस शोधालेख के माध्यम से जैन ज्योतिषविद्या के परिचय के अन्तर्गत इस विद्या की प्राचीनता, नक्षत्रों का आकार-प्रकार, तिथियों के नाम एवं स्वामी, दिन-रात के मूहूर्त एवं पंचांग-निर्माण-विधि आदि बिन्दुओं पर ससंदर्भ चर्चा की जायेगी।

भूमिका

ज्योतिषविद्या भारतीय ज्ञान का महत्त्वपूर्ण अंग है। विशेषकर इसलिये कि एक ओर तो आचार्यों ने इसे पराविद्या की कोटि में ला दिया और दूसरी ओर इसका प्रवेश सर्वसाधारण के जीवन में इस सीमा तक व्याप्त हो गया कि शुभ घड़ी, लग्न और मुहूर्त-शोधन दैनन्दिन जीवन के अंग बन गये। पंचांग के तत्त्वों का ज्ञान चाहे सर्वसाधारण को न भी हो किन्तु ज्योतिषीयों द्वारा नियोजित अनेकों पंचांग उत्तर और दक्षिण में अपनी-अपनी पद्धति के अनुसार प्रचलित है। राशिफल का तो वैज्ञानिक कहे जाने वाले आज के युग में इतनी व्यापकता से प्रसार हो गया है कि अनेक बौद्धिक व्यक्ति भी पत्र-पत्रिकाओं के 'भविष्य-फल' वाले अंश को खुले तौर पर तो कुछ लोग प्रच्छन्न रूप से देख लेते हैं। विशिष्ट धातु-

Copyright©authors